॥ श्रीः ॥

जगद्विनोद ।

मोहनलालभट्टात्मज कविवर पद्माकर
मथुरानिवासी विरचित ।

जिसमें
श्रीआनंदकंद यशोदानंद गोविन्द और श्रीवृषभानु
किशोरी राधिकाजीके विषयक अनेक प्रकारके
नायिकाभेद रस शृंगार विभूषित सोदाहरण
दोहा-कवित्त-सवैयादिमें वर्णित हैं ।

जिसको
काव्यरसिकोंके अनुरागार्थ

खेमराज श्रीकृष्णदासने
बम्बई
निज "श्रीवेङ्कटेश्वर" स्टीम् प्रेसमें
मुद्रितकर प्रकाशित किया.

संवत् १९७९, शक १८४४.